सणक्कुमारप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जो त्ति मिच्छादिट्ठी ओघसासणभंगो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं ओघभंगो।

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदअसंजदसम्माइट्ठिणो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति त्ति वत्तव्वं। णवरि सव्वट्ठे सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। कधं ? सव्वट्ठे वेदण-कसायसमुग्घादाणं तेहिंतो समुप्पज्जमाणथोवविप्फुज्जणं पडुच्च तधोवदेसादो, कारणे कज्जोवयारादो वा।

एवं गदिमग्गणा समत्ता।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता केवडि खेत्ते, सव्वलोगे[1] ॥ १७ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंके स्वस्थानस्वस्थान आदि क्षेत्र ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थानस्वस्थान आदि क्षेत्रोंके समान होते हैं।

नौ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तकके असंयतसम्यग्दृष्टि देव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १६ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए उक्त असंयतसम्यग्दृष्टि देव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, ऐसा यहां कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि सर्वार्थसिद्धिमें स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात इन स्थानोंमें देव मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धिमें वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातगत देवोंके उनके निमित्तसे उत्पन्न होनेवाला स्तोक उस्फूर्जन होता है, अर्थात् उक्त दोनों समुद्घातोंमें आत्मप्रदेशोंका बाह्य विस्तार बहुत कम होता है, इस अपेक्षा उक्त प्रकारका उपदेश दिया है। अथवा, कारणमें कार्यके उपचारसे उक्त प्रकारका उपदेश दिया है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियजीव, बादर एकेन्द्रियजीव, सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ १७ ॥

---

१ इन्द्रियानुवादेन एकेन्द्रियाणां क्षेत्रं सर्वलोकः। स. सि. १, ८.

एत्थ लोगणिद्देसेण पंचण्हं लोगाणं गहणं, देशामर्शकत्वाल्लोकस्य। बादर-सुहुमादिवयणेण सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणद-जीवाणं गहणं, छव्विहावत्थावदिरित्तबादरादीणमभावादो। तदो सव्वसुत्ताणि देसामासिगाणि चेव? ण एस णियमो उभयगुणोवलंभादो। सत्थाण वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा एइंदिया केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। माणुसखेत्तं ण विण्णायदे, संपहियकाले विसिट्ठुव-एसाभावा। तं जहा— वेउव्वियमुट्ठावेंतरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अहवा तस्स ओगाहणा उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। विउव्वमाण-एइंदियरासीदो घणंगुलस्स भागहारो

इस सूत्रमें लोक पदके निर्देशसे पांचों लोकोंका ग्रहण किया है, क्योंकि, यहां लोक पदका निर्देश देशामर्शक है। सूत्रमें बादर और सूक्ष्म आदि वचनसे स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदसे परिणत हुए जीवोंका ग्रहण किया है, क्योंकि, उक्त छह प्रकारकी अवस्थाओंके अतिरिक्त बादर आदि जीव नहीं पाये जाते हैं।

शंका— यदि ऐसा है, तो सर्व सूत्र देशामर्शक ही हैं?

समाधान— सर्व सूत्र देशामर्शक ही हैं, यह नियम नहीं है, क्योंकि, सूत्रोंमें दोनों प्रकारके धर्म पाये जाते हैं। अर्थात् कुछ सूत्र देशामर्शक हैं और कुछ नहीं, इसलिये सभी सूत्र देशामर्शक ही हैं, यह नियम नहीं किया जा सकता है।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए एकेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें रहते हैं। वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए एकेन्द्रिय जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। किन्तु मानुषक्षेत्रके सम्बन्धमें नहीं जाना जाता है कि उसके कितने भागमें रहते हैं, क्योंकि, वर्तमानकालमें इस प्रकारका विशिष्ट उपदेश नहीं पाया जाता है। आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— विक्रियाको उत्पन्न करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अथवा, विक्रियात्मक एकेन्द्रिय जीवोंके शरीरकी अवगाहना उत्सेधघनांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है।

शंका— उत्सेधघनांगुलमें जिसका भाग देनेसे उत्सेधघनांगुलका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है, उस असंख्यातवें भागका प्रतिभाग क्या है?

समाधान— पल्योपमका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है, अर्थात् पल्योपमके असंख्यातवें भागका उत्सेधघनांगुलमें भाग देनेसे उत्सेधघनांगुलका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है जो विक्रियात्मक एकेन्द्रिय जीवके शरीरकी अवगाहना है।

किमप्पो बहुगो समो वा इदि ण[1] णव्वदे ? जदि वेउव्वियरासीदो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो होदि, तो माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। अह असंखेज्जगुणो, तो असंखेज्जदिभागे। अह सरिसो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। ण च एत्थ एदं चेव होदि त्ति णिच्छओ अत्थि, तदो माणुसखेत्तं ण णव्वदि त्ति सिद्धं।

बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोएहिंतो असंखेज्जगुणे। तं जहा– मंदरमूलादो उवरि जाव सदर-सहस्सारकप्पो त्ति पंचरज्जु-उस्सेधेण लोगणाली समचउरंसा वादेण आउण्णा, तं जगपदरं कस्सामो। एक्कुणवंचासरज्जुपदराणं जदि एगं जगपदरं लब्भदि, तो पंचरज्जुमेत्तरज्जुपदराणं किं लभामो त्ति फलगुणिदमिच्छं पमाणेणोवट्टिदे[2]

ऊपर विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशि भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बतलाई है और उत्सेधघनांगुलका भागहार भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बतलाया है, इसलिये विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशिसे उत्सेधघनांगुलका भागहार क्या छोटा है, या बड़ा है, या समान है, यह कुछ नहीं जाना जाता है। अब यदि एकेन्द्रिय वैक्रियिकराशिसे उत्सेधघनांगुलका भागहार संख्यातगुणा है, ऐसा लेते हैं तो विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशि मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है, ऐसा अभिप्राय निकलता है। अथवा, विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशिसे उत्सेधघनांगुलका भागहार असंख्यातगुणा लेते हैं तो वह राशि मानुषक्षेत्रके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है, यह अभिप्राय होता है और यदि विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशिसे उत्सेधघनांगुलका भागहार समान है, ऐसा लेते हैं तो वह राशि मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है यह अभिप्राय होता है। परन्तु यहांपर मानुषक्षेत्रका इतना ही भाग लिया गया है, ऐसा कुछ भी निश्चय नहीं है, इसलिये मानुषक्षेत्रके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जाना जाता है कि विक्रिया करनेवाली एकेन्द्रिय जीवराशि उसके कितने भागमें रहती है, यह सिद्ध हुआ।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें तथा मनुष्यलोक और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है– मन्दराचलके मूलभागसे लेकर ऊपर शतार और सहस्रारकल्प तक पांच राजु उत्सेधरूपसे समचतुरस्र लोकनाली वायुसे परिपूर्ण है। अब उसे जगत्प्रतरके प्रमाणस्वरूप करते हैं– यदि उनंचास प्रतरराजुओंके एक पटलका एक जगत्प्रतर प्राप्त होता है, तो पांच राजुप्रमाण पांच प्रतरराजुओंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार त्रैराशिक करके एक जगत्प्रतरप्रमाण फलराशिसे पांच प्रतरराजुप्रमाण इच्छाराशिको गुणित करके उनंचास प्रतरराजुप्रमाण प्रमाणराशिसे भाजित करनेपर, दो बटे पांच कम उनहत्तरसे घनलोकके भाजित करनेपर जो एक भाग होता है उतना लब्ध आता है, जो कि ५ घनराजु प्रमाण है।

---

१ प्रतिषु 'ण' इति पाठो नास्ति। २ प्रतिषु '–दो चे' इति पाठः।

बे-पंचभागूण-एगूणसत्तरिरूवेहि घणलोगे भागे हिदे एगभागो आगच्छदि । लोगपेरंतवादखेत्तं संखेज्जजोयणबाहल्लं जगपदरं पुव्वपरूविदमाणेदूण एत्थेव पक्खिविय अट्ठपुढविखेत्तं तेसिं हेट्ठा ट्ठिदवादजगपदरं संखेज्जजोयणबाहल्लमाणेदूण पक्खित्ते जेण लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ताणं खेत्तं जादं, तेण बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ता लोगस्स संखेज्जदिभागे होंति त्ति सिद्धं। वेउव्वियसमुग्घादगदाणं एइंदियओघभंगो । मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे । बादरेइंदियअपज्जत्ताणं बादरेइंदियभंगो । णवरि वेउव्वियपदं णत्थि । सुहुमेइंदिया तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ता य सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे, सुहुमाणं सव्वत्थ अच्छणं पडि विरोहाभावादो ।

वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता य केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे[1] ॥ १८ ॥

उदाहरण– $१ \times ५ = ५$, $५ \div ४९ = \frac{५}{४९}$ जगत्प्रतर । चूंकि यह वातपरिपूर्ण क्षेत्र १ राजु मोटा है, अतएव ५ घनराजु हुआ, जो कि $\frac{३४३}{१} \div ६८\frac{३}{५} = \frac{५}{३४३}$ घनलोक प्रमाण होता है ।

तथा पहले प्ररूपित किये गये लोकके चारों ओर प्रान्तभागमें संख्यात योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण वातक्षेत्रको लाकर इसी पूर्वोक्त वातक्षेत्रमें मिलाकर तथा आठों पृथिवियोंके क्षेत्र और उनके नीचे स्थित वायुक्षेत्र, जो कि संख्यात योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण हैं, उनको उसी पूर्वोक्त क्षेत्रमें मिला देनेपर चूंकि लोकके संख्यातवें भागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र होता है, इसलिये बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हुआ। वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र वैक्रियिकसमुद्घातगत सामान्य एकेन्द्रियोंके क्षेत्रके समान होता है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका क्षेत्र बादर एकेन्द्रियोंके समान होता है । इतनी विशेषता है कि बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके वैक्रियिकसमुद्घातपद नहीं होता है । स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं, क्योंकि, सूक्ष्म जीवोंके सर्व लोकमें पाये जानेमें कोई विरोध नहीं है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव और उन्हींके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।। १८ ।।

---

१ विकलेन्द्रियाणां लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

एदस्स अत्थो वुच्चदे– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-समुग्घादपरिणदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। णवरि तिण्हमपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। मारणंतियउववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे, अड्डाइज्जादो वि असंखेज्जगुणे। एत्थ मारणंतियखेत्तमाणिज्जमाणे बीइंदिय-तीइंदिय-चदुरिंदिया तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्तदव्वं ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-उवक्कमणकालेण खंडिय तस्स असंखेज्जदिभागो वा संखेज्जदिभागो वा मारणंतिएण विणा मरदि त्ति एदस्स असंखेज्जा भागा संखेज्जा भागा वा घेत्तूण मारणंतिय-उवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मारणंतियरासी होदि। रज्जुमेत्तायामेण ट्ठिदरासिमिच्छामो त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय अप्पप्पणो विक्खंभवग्गगुणिदरज्जूए गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि। उववादखेत्तं ठविज्जमाणे एदं चेव ठविय मारणंतिय-उवक्कमणकालगुणगारमवणिदे

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घात इन पदोंसे परिणत हुए उक्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इतनी विशेषता है कि तीनों ही विकलेन्द्रियोंके अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए तीनों विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें तथा अढ़ाईद्वीपसे भी असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहांपर मारणान्तिकक्षेत्रके लाते समय द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा उनकी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवराशिको स्थापित कर उसे आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकालसे खंडित करके उसका जो असंख्यातवां भाग अथवा संख्यातवां भाग लब्ध आवे, उतनी राशि मारणान्तिकसमुद्घातके विना मरण करती है। इसलिये इस राशिके असंख्यात बहुभाग अथवा संख्यात बहुभागप्रमाण राशिको ग्रहण करके उसे मारणान्तिकसमुद्घातके उपक्रमण-कालरूप आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर मारणान्तिक जीवराशि होती है। यहां एक राजुमात्र आयामसे स्थित मारणान्तिक जीवराशि इच्छित है, इसलिये उक्त राशिके नीचे भागहारके स्थानमें पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र भागहारको स्थापित करके और अपने अपने विष्कंभके वर्गसे गुणित राजुसे उक्त राशिके गुणित करनेपर मारणान्तिकसमुद्घातगत विकलत्रय और उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवोंका मारणान्तिकक्षेत्र होता है। उपपादक्षेत्रके लाते समय इसी मारणान्तिक जीवराशिको स्थापित करके और उसमेंसे मारणान्तिक उपक्रमाणकालके गुणकारको निकाल लेनेपर एक समयमें संचित हुई मारणान्तिक जीवराशि होती है। एक समयमें संचित हुई

एगसमयसंचिदो मारणंतियरासी होदि । तस्स असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उप्पज्जंति त्ति तस्स असंखेज्जे भागे घेत्तूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिदे सेढीए संखेज्जदिभागायामेण विदियदंडट्ठिदरासी होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे[1] ॥ १९ ॥

एदस्स अत्थो - सत्थाणसत्थाण - विहारवदिसत्थाण - वेदण-कसाय-वेउव्विय-समुग्घादगदपंचिंदियमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । मारणंतिय-उववादगदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एदाणं खेत्ताणमाणयणं पुव्वं व कादव्वं । सासणादीणमोघभंगो । एवं पज्जत्ताणं पि वत्तव्वं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ २० ॥

इस मारणान्तिक जीवराशिके असंख्यात बहुभाग जीव विग्रहगतिसे उत्पन्न होते हैं, इसलिये उसके असंख्यात भागको ग्रहण करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जगत्श्रेणीके संख्यातवें भाग आयामरूपसे दूसरे दंडमें स्थित जीवराशि होती है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इन क्षेत्रोंको पहलेके समान ले आना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थानस्वस्थान आदि पदगत क्षेत्र ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थानस्वस्थान आदि पदगत क्षेत्रके समान जानना चाहिये । इसी प्रकार पर्याप्तोंके क्षेत्रका भी कथन करना चाहिये ।

सयोगिकेवलियोंका क्षेत्र सामान्यप्ररूपणाके समान है ॥ २० ॥

---

१ पंचेन्द्रियाणां मनुष्यवत् । स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति ण वुच्चदे ।

पंचिंदियअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २१ ॥

सत्थाण - वेदण - कसायसमुग्घादगदपंचिंदियअपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणादो । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे ।

एवमिंदियमग्गणा गदा ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया, बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता, सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता य केवडि खेत्ते, सव्वलोगे[1] ॥ २२ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा पहले कर आये हैं, इसलिये यहां पर पुनः उसका कथन नहीं करते हैं ।

लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २१ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंकी अवगाहना अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें तथा मनुष्यलोक और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

इस प्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तैजस्कायिक, बादर वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादर कायसम्बन्धी अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तैजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक और इन्हीं सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २२ ॥

---

१ कायानुवादेन पृथिवीकायादिवनस्पतिकायिकान्तानां सर्वलोकः । स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– पुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया सुहुमआउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया सुहुमतेउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता च सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोए, असंखेज्जलोगमेत्तपरिमाणादो । णवरि तेउकाइया वेउव्वियसमुग्घादगदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, वाउकाइया वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । माणुसखेत्तं ण णव्वदे । बादरपुढविकाइया तेसिं चेव अपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे[1], अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । तं जहा– जेण बादरपुढविकाइया सापज्जत्ता पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति, तेण पुढवीओ जगपदरपमाणेण कस्सामो । [2]तत्थ पढमपुढवी एगरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुदीहा वीससहस्सूण-वे-जोयणलक्खबाहल्ला, एसा अप्पणो बाहल्लस्स सत्तमभागबाहल्लं जगपदरं होदि ।

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्‌घात, कषायसमुद्‌घात, मारणान्तिकसमुद्‌घात और उपपादको प्राप्त हुए पृथिवीकायिक और सूक्ष्म पृथिवीकायिक तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव, अप्कायिक और सूक्ष्म अप्कायिक तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव, तैजस्कायिक और सूक्ष्म तैजस्कायिक तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव, वायुकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं, क्योंकि, उक्त राशियोंका परिमाण असंख्यात लोकप्रमाण है । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकसमुद्‌घातको प्राप्त हुई तैजस्कायिकराशि पांचों लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है । वैक्रियिकसमुद्‌घातको प्राप्त हुई वायुकायिकराशि सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है । वैक्रियिकसमुद्‌घातको प्राप्त हुई वायुकायिकराशि मानुषक्षेत्रकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहती है, यह नहीं जाना जाता है । स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्‌घात और कषायसमुद्‌घातको प्राप्त हुए बादर पृथिवीकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है– चूंकि बादर पृथिवीकायिक जीव और उन्हींके अपर्याप्त जीव पृथिवीका आश्रय लेकर ही रहते हैं, इसलिये पृथिवियोंको जगत्प्रतरके प्रमाणसे करते हैं । उनमेंसे एक राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और बीस हजार योजन कम दो लाख योजन मोटी पहली पृथिवी है । यह घनफलकी अपेक्षा अपने बाहल्यके अर्थात् एक लाख अस्सी हजार योजनके सातवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

१ प्रतिषु 'असंखेज्जगुणे' इति पाठः ।

२ इत आरभ्याष्टपृथिवीप्ररूपकोऽधस्तनो गद्यभागस्त्रिलोकप्रज्ञप्तेः प्रथमाधिकारस्यान्तिमभागेन सह शब्दशः समानः ।

विदियपुढवी सत्तमभागूण-वे-रज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा बत्तीसजोयणसहस्स-बाहल्ला सोलहसहस्साहियचदुण्हं लक्खाणं एगुणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । तदियपुढवी वे-सत्तभागहीण-तिण्णिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा अट्ठावीसजोयण-सहस्सबाहल्ला बत्तीससहस्साहियं पंचलक्खजोयणाणं एगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । चउत्थपुढवी तिण्णि-सत्तभागूण-चत्तारिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा चउवीसजोयणसहस्सबाहल्ला छजोयणलक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि ।

उदाहरण— पहली पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु, पूर्वसे पश्चिमतक एक राजु और एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है, अतएव १८०००० योजनोंके प्रमाणमें ७ का भाग देनेसे २५७१४$\frac{२}{७}$ योजन लब्ध आते हैं और एक राजुके स्थानमें जगत्श्रेणीका प्रमाण हो जाता है । इस प्रकार २५७१४$\frac{२}{७}$ योजनोंके जितने प्रदेश हों उतने जगत्प्रतरप्रमाण पहली पृथिवीका घनफल होता है ।

दूसरी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे एक भाग कम दो राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और बत्तीस हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा चार लाख सोलह हजार योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

उदाहरण— दूसरी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु; पूर्वसे पश्चिमतक $\frac{१३}{७}$ राजु और ३२००० योजन मोटी;

$$\frac{१३}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{१३}{१};\ \frac{१३}{१} \times \frac{३२०००}{१} = \frac{४१६०००}{१};\ \frac{४१६०००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{४१६०००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण ।

तीसरी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे दो भाग कम तीन राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और अट्ठाईस हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा पांच लाख बत्तीस हजार योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

उदाहरण— तीसरी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक ७ राजु लम्बी, पूर्वसे पश्चिमतक $\frac{१९}{७}$ राजु चौड़ी और २८००० योजन मोटी है ।

$$\frac{१९}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{१९}{१};\ \frac{१९}{१} \times \frac{२८०००}{१} = \frac{५३२०००}{१};\ \frac{५३२०००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{५३२०००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतर ।

चौथी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे तीन भाग कम चार राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और चौबीस हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा छह लाख योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

पंचमपुढवी चत्तारि-सत्तभागूणपंचरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा वीसजोयणसहस्स-बाहल्ला वीससहस्साहियछण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । छट्ठपुढवी पंच-सत्तभागूण-छरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा सोलहजोयणसहस्स-बाहल्ला बाणउदिसहस्साहियपंचण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । सत्तमपुढवी छ-सत्तभागूण-सत्तरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा अट्ठजोयणसहस्स-बाहल्ला चउदालसहस्साहियतिण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि ।

उदाहरण– चौथी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु, पूर्वसे पश्चिमतक $\frac{२५}{७}$ राजु और मोटी २४००० योजन है ।

$$\frac{२५}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{२५}{१};\quad \frac{२५}{१} \times \frac{२४०००}{१} = \frac{६०००००}{१};\quad \frac{६०००००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{६०००००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण ।

पांचवी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे चार भाग कम पांच राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और बीस हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा छह लाख बीस हजार योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

उदाहरण– पांचवी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु; पूर्वसे पश्चिमतक $\frac{३१}{७}$ राजु और मोटी २०००० योजन है ।

$$\frac{३१}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{३१}{१};\quad \frac{३१}{१} \times \frac{२००००}{१} = \frac{६२००००}{१};\quad \frac{६२००००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{६२००००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण ।

छठी पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे पांच भाग कम छह राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और सोलह हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा पांच लाख बानवे हजार योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

उदाहरण– छठी पृथिवी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु, पूर्वसे पश्चिमतक $\frac{३७}{७}$ राजु और मोटी १६००० योजन है ।

$$\frac{३७}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{३७}{१};\quad \frac{३७}{१} \times \frac{१६०००}{१} = \frac{५९२०००}{१};\quad \frac{५९२०००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{५९२०००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण ।

सातवीं पृथिवी एक राजुके सात भागोंमेंसे छह भाग कम सात राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और आठ हजार योजन मोटी है । यह घनफलकी अपेक्षा तीन लाख चवालीस हजार योजनोंके उनंचासवें भाग बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है ।

उदाहरण– सातवीं पृथिवी उत्तरसे दक्षिण तक सात राजु; पूर्वसे पश्चिम तक $\frac{४३}{७}$ राजु और मोटी ८००० योजन है ।

अट्ठमपुढवी सत्तरज्जुआयदा एगरज्जुरुंदा अट्ठजोयणबाहल्ला सत्तमभागाहिय-एकजोयणबाहल्लं जगपदरं होदि। एदाणि सव्वाणि एगट्ठे कदे तिरियलोगबाहल्लादो संखेज्जगुणबाहल्लं जगपदरं होदि। एत्थ असंखेज्जा लोगमेत्ता पुढविकाइया चिट्ठंति, तेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणो त्ति सिद्धं। एदेहि पदेहि लोगस्स असंखेज्जदिभागे चिट्ठंता बादरपुढविकाइया सुत्तेण सव्वलोगे चिट्ठंति त्ति वुत्ता, तं कधं घडदे? ण, मारणंतिय-उववादपदे पडुच्च तधोवदेसादो। मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे।

$$\frac{४३}{७} \times \frac{७}{१} = \frac{४३}{१};\ \frac{४३}{१} \times \frac{८०००}{१} = \frac{३४४०००}{१};\ \frac{३४४०००}{१} \div \frac{४९}{१} = \frac{३४४०००}{४९}$$

योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण।

आठवीं पृथिवी सात राजु लम्बी, एक राजु चौड़ी और आठ योजन मोटी है। यह घनफलकी अपेक्षा एक योजनके सात भाग करनेपर उनमेंसे सातवां भाग अर्थात् एक भाग अधिक एक योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण है।

उदाहरण– आठवीं पृथिवी उत्तरसे दक्षिण तक सात राजु; पूर्वसे पश्चिम तक एक राजु और आठ योजन मोटी है।

$१ \times ७ = ७;\ ८ \div ७ = \frac{८}{७}$ योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतरप्रमाण.

इन सबको एकत्रित करनेपर तिर्यग्लोकके बाहल्यसे संख्यातगुणे बाहल्यरूप जगत्प्रतर होता है। इन पृथिवियोंमें असंख्यात लोकप्रमाण पृथिवीकायिक जीव रहते हैं, इसलिये वे तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हुआ।

विशेषार्थ– तिर्यग्लोकका प्रमाण घनफलकी अपेक्षा १४२८५$\frac{५}{७}$ योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतर है और आठों पृथिवियोंका घनफल ६२३४३६$\frac{४}{७}$ योजन बाहल्यरूप जगत्प्रतर है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि तिर्यग्लोकके प्रमाणसे आठों पृथिवियोंका क्षेत्र संख्यातगुणा है। बादर पृथिवीकायिक जीव इन आठों पृथिवियोंमें सर्वत्र पाये जाते हैं, इसलिये वे तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हो जाता है।

शंका– उपर्युक्त स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घात, इन पदोंकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक जीव जब कि लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, तो वे 'सर्व लोकमें रहते हैं' ऐसा जो सूत्रद्वारा कहा गया है वह कैसे घटित होता है?

समाधान– नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादकी अपेक्षा 'बादर पृथिवीकायिक जीव सर्व लोकमें रहते हैं,' इस प्रकारका उपदेश दिया गया है।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए बादर पृथिवीकायिक और बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं। इसी प्रकार बादर अप्कायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका भी कथन करना चाहिये। अर्थात् पृथिवीकायिक और अपर्याप्त पृथिवीकायिक

एवं बादरआउकाइयाणं तेसिमपज्जत्ताणं च । पुढवीसु सव्वत्थ ण जलमुवलंभदि त्ति आउकाइया सव्वत्थ पुढवीसु ण होंति त्ति णासंकणिज्जं, बादरकम्मोदएण बादरत्तमुवगयाणं अणुवलंभमाणाणं पि सव्वपुढवीसु अत्थित्तविरोधाभावादो । एवं बादरतेउकाइयाणं तस्सेव अपज्जत्ताणं च । णवरि वेउव्वियपदमत्थि, ते च पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । तेउकाइया बादरा सव्वपुढवीसु होंति त्ति कधं णव्वदे ? आगमादो । एवं बादरवाउकाइयाणं तेसिमपज्जत्ताणं च । णवरि सत्थाण-वेयण-कसाय-समुग्घादगदा तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, दो-लोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । माणुसखेत्तं ण विण्णायदे ।

जीवोंके समान स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर जलकायिक और बादरजलकायिक अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें, तथा मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए बादरजलकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं ।

शंका— पृथिवियोंमें सर्वत्र जल नहीं पाया जाता है, इसलिये जलकायिक जीव पृथिवियोंमें सर्वत्र नहीं रहते हैं ?

समाधान— ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, बादरनामक नामकर्मके उदयसे बादरत्वको प्राप्त हुए जलकायिक जीव यद्यपि पृथिवियोंमें सर्वत्र नहीं पाये जाते हैं, तो भी उनका सर्व पृथिवियोंमें अस्तित्व होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

इसी प्रकार अर्थात् बादर जलकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंके समान बादर तैजस्कायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थानस्वस्थान आदि पूर्वोक्त पदोंमें कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि बादर तैजस्कायिक जीवोंके वैक्रियिकसमुद्घातपद भी होता है और वे पांचों लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।

शंका— बादर तैजस्कायिक जीव सर्व पृथिवियोंमें होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आगमसे यह जाना जाता है कि बादर तैजस्कायिक जीव सर्व पृथिवियोंमें रहते हैं ।

इसी प्रकार बादर वायुकायिक और उन्हींके अपर्याप्त जीवोंके पदोंका कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि स्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर वायुकायिक और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और तिर्यग्लोक तथा मनुष्यलोक इन दो लोकोंसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर वायुकायिक जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । किन्तु यहां मनुष्यक्षेत्र नहीं जाना जाता है कि उसके कितने भागमें रहते हैं । सभी अपर्याप्त जीवोंमें वैक्रियिकसमुद्घातपद

सव्वअपज्जत्तेसु वेउव्वियपदं णत्थि । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता बादरणिगोदपविट्ठिदा तस्सेव अपज्जत्ता च बादरपुढवितुल्ला ।

बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा-- बादरपुढविपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एत्थ ओवट्टणं ठविय जोएदव्वं । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णरतिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एवं बादरआउकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपविट्ठिदपज्जत्ताणमेवं चेव । णवरि बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता वेदण-कसाय-सत्थाणेसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे । एदेसिं रासीणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जगपदराणि पदरंगुलेण

नहीं होता है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर और उन्हींके अपर्याप्त जीव तथा बादर निगोदप्रतिष्ठित और उन्हींके अपर्याप्त जीव, बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान हैं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव, बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव, बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीव और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है-- स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहांपर अपवर्तनाको स्थापना करके योजना कर लेनी चाहिये । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तथा मनुष्य और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव भी स्वस्थानस्वस्थान आदि पदोंमें इसी प्रकार रहते हैं । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त और बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके पदोंका इसी प्रकार कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और स्वस्थान पदगत बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जगत्प्रतरोंको प्रतरांगुलसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उतना इन राशियोंका प्रमाण है । तथा अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं होदि। ओगाहणा पुण घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-ओगाहणा वि घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, अण्णहा तदो बीइंदियपज्जत्त-ओगाहणा असंखेज्जगुणा ण होज्ज। तदो पत्तेयसरीरपज्जत्तरासी तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागेण होज्ज? ण एस दोसो, घणंगुलभागहारो पदरंगुलभागहारादो संखेज्जगुणो त्ति। पत्तेयसरीरपज्जत्तजहण्णोगाहणादो बीइंदियपज्जत्तजहण्णोगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति कुदो णव्वदे? वेयणखेत्तविहाणम्हि वुत्तवोगाहणदंडयादो। तं जहा— सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा। सुहुमवाउकाइय-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमआउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरवाउकाइयअपज्जत्तसस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा।

शंका— उसका क्या प्रतिभाग है, अर्थात् जिसका भाग घनांगुलमें देनेसे उसका विवक्षित असंख्यातवां भाग आता है, वह प्रतिभाग क्या है?

समाधान— पल्योपमका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है।

शंका— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवकी अवगाहना भी घनांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, यदि ऐसा न माना जावे तो इससे द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी अवगाहना असंख्यातगुणी नहीं हो सकती है, इसलिये प्रत्येकशरीर पर्याप्तराशि तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण होना चाहिये?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, घनांगुलका भागहार प्रतरांगुलके भागहारसे संख्यातगुणा है।

शंका— वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— वेदनाक्षेत्रविधानमें कहे गये अवगाहनादंडकसे यह जाना जाता है कि प्रत्येकशरीरकी जघन्य अवगाहनासे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।

आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना सबसे स्तोक है। इससे सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म तैजस्कायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म जलकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर तैजस्कायिक अपर्याप्त

बादरतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरआउकाइय-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। वेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। सुहुमवाउकाइयणिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। सुहुमतेउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव

....

जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर जलकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर निगोद अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म निगोद निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म तैजस्कायिक निर्वृत्ति पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है। इससे सूक्ष्म तैजस्कायिक अपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म तैजस्कायिक पर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है। इससे सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरणिगोदणिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । (णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।)[1] बादरवणप्फइ-काइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बेइंदिय-णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बेइंदिय-णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बादरवणप्फइ-काइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।

इससे बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । इससे बादर निगोद निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । इससे बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । (इससे निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । इससे निगोदप्रतिष्ठित निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । इससे निगोदप्रतिष्ठित निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।) इससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । इससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । इससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । इससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट

१ प्रतिषु कोष्टकान्तर्गतपाठो नास्ति, वेदनाखंडादत्र योजितः ।

पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। बादरवणप्फइपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणागुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सुहुमादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[1]। बादरादो सुहुमस्स ओगाहणागुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो संखेज्जा समया। एत्थ बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो इदि वुत्ते होदु णामेदं, पदरंगुलभागहारादो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो त्ति कुदो णव्वदे? तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे त्ति गुरूवएसादो। एदम्हादो चेव एदिस्से ओगाहणाए जीवबहुत्तं च णायव्वं।

अवगाहना संख्यातगुणी है। इससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है। इससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है। इयसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है। इससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। सूक्ष्म जीवसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। बादर जीवसे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। बादरजीवसे अन्य बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। बादरसे बादरकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है, अर्थात् बादर पर्याप्त द्वीन्द्रिय जीवकी जघन्य अवगाहनासे बादर पर्याप्त त्रीन्द्रिय आदि जीवोंकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है।

शंका— यहांपर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना घनांगुलके असंख्यातवें भाग कही है, सो वह भले ही रही आवे, किन्तु प्रतरांगुलके भागहारसे घनांगुलका भागहार संख्यातगुणा होता है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और स्वस्थानपदोंकी अपेक्षा 'तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें रहते हैं' इस प्रकारके गुरूपदेशसे जाना जाता है कि प्रतरांगुलके भागहारसे घनांगुलका भागहार संख्यातगुणा है।

तथा, उक्त इसी गुरूपदेशसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीरकी अवगाहनामें जीवोंकी अधिकता भी जाननी चाहिए।

---

१ सुहुमेदरगुणगारो आवलिपल्ला असंखभागो दु। गो. जी. १०१,

बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता किमिदि सुत्तम्हि ण वुत्ता ? ण, तेसिं पत्तेयसरीरेसु अंतब्भावादो । बादरतेउकाइयपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे ।

बादरवाउक्काइयपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे— सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा बादरवाउपज्जत्ता तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । बादरवाउपज्जत्तरासी लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तो मारणंतिय-उववादगदो सव्वलोगे किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, रज्जुपदरमुहेण पंचरज्जुआयामेण[1] ट्ठिदखेत्ते चेव पाएण तेसिमुप्पत्तीदो । अण्णखेत्तंतरं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणमइथोवत्तं कधमवगम्मदे? बादरवाउक्काइयपज्जत्ता लोगस्स संखेज्जदिभागे इदि सुत्तादो । अण्णहा सुत्तस्स पुध

शंका— सूत्रमें बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीव क्यों नहीं कहे ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका प्रत्येकशरीर पर्याप्त वनस्पतिकायिक जीवोंमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीव पांचों लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहते हैं । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत वे ही बादर तैजस्कायिक जीव चारों लोकोंके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके संख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदगत बादरवायुकायिक पर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके संख्यातवें भागमें और तिर्यग्लोक तथा मनुष्यलोक इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

शंका— बादर वायुकायिक पर्याप्तराशि लोकके संख्यातवें भागप्रमाण है, जब वह मारणान्तिकसमुद्घात उपपाद पदोंको प्राप्त हो तब वह सर्व लोकमें क्यों नहीं रहती है ?

समाधान— नहीं रहती है, क्योंकि, राजुप्रतरप्रमाण मुखसे और पांच राजु आयामसे स्थित क्षेत्रमें ही प्रायः करके उन बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है ।

शंका— अन्य क्षेत्रान्तरको जाकर उत्पन्न होनेवाले बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव अत्यन्त थोड़े हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

---

१ बादरवातकायिनां विकुर्वणाद् रज्जुव्यासायाम-पंचरज्जूदयक्षेत्रफलं लोकसंख्यातभागमात्रं भवति । गो. जी. जी. प्र. गा. ५४५.

आरंभो णिरत्थओ होज्ज, बादरवाउअपज्जत्तेसु अंतब्भावादो। वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। अड्ढाइज्जं ण विण्णायदे।

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ २५ ॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा वणप्फदिकाइया सुहुमवणप्फइ-काइया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता च सव्वलोगे। एवं णिगोद-सुहुमणिगोद तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं च बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदा तेसिं पज्जत्तापज्जत्ता च सत्थाण-वेदणसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे। मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोए। बादरा पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति त्ति[1] लोगस्स असंखेज्जदिभागे होंति।

समाधान– 'बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव लोकके संख्यातवें भागमें रहते हैं,' इस सूत्रसे जाना जाता है कि राजुप्रतरप्रमाण मुखवाले और पांच राजु आयामवाले क्षेत्रके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रमें जाकर उत्पन्न होनेवाले बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव बहुत कम होते हैं। यदि ऐसा न माना जावे, तो इस सूत्रका पृथक् आरंभ निरर्थक हो जायगा, क्योंकि, फिर तो उनका बादर वायुकायिक अपर्याप्तोंमें अन्तर्भाव हो जायगा।

वैक्रियिकसमुद्घातगत बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहते हैं। अढ़ाईद्वीपसे अधिक क्षेत्रमें रहते हैं या कममें, यह जाना नहीं जाता।

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २५ ॥

स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं। इसी प्रकार निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके जानना चाहिये। स्वस्थान और वेदनासमुद्घात बादर वनस्पतिकायिक और बादर निगोद जीव तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत ये सब बादर जीव सर्व लोकमें रहते हैं। उक्त बादर जीव पृथिवियोंका ही आश्रय लेकर रहते हैं, इसलिये वे लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं।

१ आधारे थूलाओ। गो. जी. १८४.